

वसुधारा तारुधारणी

वसुधारा तारुधारणी

✓

धर्मरत्न बज्राचार्य सुरत श्री महाबिहार

DH250

नमो भगवते वासुदेवाय ॥ अवमयाश्च गुणमकस्मिन् समयत्र वा
 कोमी याम्मान्नानगय याम् विद्वन्नगिस्म ॥ कश्चकसह कसदायमेव न वासि
 नामरुगाहिकुसुंधनसार्द्धं यंत्रमात्रेहिकुगनेऽसुम्यहूले म्ममहाधावकेन
 यत्रेभ्यश्चाधिसत्वेमहासत्त्वेः सर्ववृद्धगुणमसन्नागनेः ॥ गगुखलूयूनः समय
 नान्नमस्यामेवयसदिनेनवयत्रिवृणः यूनस्कृणः ॥ सर्वदात्रिडयाधि

धादामहाधार्द्धः ननखलूयूनः समय
 यत्रिसाववायधर्मयर्णयंदगयनिसर्मा ॥ ननखलूयूनः समयनको
 नहानगयोः सूचडानामगुरुयगियुगिः पुगिवसनिस्म ॥ उयमार्कन्दि
 यामनमानसः ॥ चरुपूगावहूउहिरुकोवहूरुगायत्रिजनसम्यत्रः ॥ यरुगवा
 रुनायसंक्रान्तः ॥ उयसंक्रम्यरुगवगः यादोभिन्नसावन्दिता ॥ रुगवकमनकसग
 मरुपुपुदकिनीकृत्वाचक्रान्नयनसोदग ॥ चक्रान्ननिवर्तः ॥ सूचडानामगुरुय

रुगवन्ममदवाचन्॥ यच्छुभमम्गवन्धुगगार्हन्संम्यक्मूर्ध्वकश्चिदवयुसं
वम्भुगवानवकासंक्रयन्॥ यश्चवाकनक्षया॥ चवमूर्कुरुगवान्मूर्चुडगदय
मिमगदवाचन्॥ यच्छुभंमदयगययदवाकाकस्यहेर्जैकगल्लुगवाकनक्ष
चित्मन्त्राधियम्या॥ चवमूर्कसूचलासामगदयमिः॥ साधुरगवन्मिगिरुवनीव
नृदमेधुत्वा रगवन्ममदवाचन्॥ कथंरुगवन्कुलपूणीवा इदिगावा दत्रिडा

रुत्वा अदत्रिडाहवमि॥ व्याधिनक्ष्त्रत्वाञ्जुव्याधिनीरुवमि॥ अथखल्लुगवान्जा
नन्मवसूचलंमदयमिममदवाचन्॥ किमिमिल्लंमदयमिदत्रिडागायाः यत्रिपुमृच्छ
मि॥ चवमूर्कसूचलागदयमिरुगवन्ममदवाचन्॥ दत्रिडाहंरुगवन्मदत्रिडाहं
सूगगा॥ वदुयाथावदुयूणीवदुइदिहको वदुह्योयत्रिजनसंम्यन्नः॥ नदेभय
लुगवान्धर्मयथायंथनदत्रिडाः॥ सत्वाञ्जुदत्रिडाहवयः॥ व्याधिनक्ष्त्रत्वा

अथाधिनाम्यववयुः॥ वरुधनधन्यकोषकोषाग्नान्ध्रवयुः प्रियमनूजयम
नारुदनायाम्यववयुः॥ दानयनयामहादानयनय॥ अकिनाहिनय्यसुवर्धन
धन्यकोषकोषाग्नान्ध्रः॥ मलिमूर्कीवज्रवैद्यमंस्वमिलायवाञ्जाननयन
मसमृद्धाम्यववयुः॥ सुसुनिधिगमरुदयुगदानकृद्माम्यववयुः॥ अवंमूर्की
नदनसर्वासायनियूनकंलवृक्षस्यकंनरासुवन्द्यगृह्यनिभगदवीचन॥ अकि

३

उत्तरनरुदयवृद्धमितिधन्यसंख्येयवृकल्यमितिगव्यमिगव्ययदासिरुनकासनगेन
समयनरुगवाङ्गीवज्रधनसागत्रनिर्धावीषानामनथागनीहंसंम्यकवृद्धालोकः॥
आदिविद्याचनसम्यन्नः॥ सुगनीलाकविदनुरुनः॥ पुत्रवदम्यसात्रिथिः॥ साकादेवा
नाममनूष्यालक्षवृद्धोहगवान्॥ गणानिकान्मयाकुलयुगवसूधनानामध्वजली
गुलाशार्गुहीनाध्वजिगावाचिनादमिगाययवाप्रा॥ अनुमादिगायत्रयश्चविष्णु

त्रलसस्युकाभिना॥ अरुमय्यगर्हि नकुल्युगनां धात्रलीनः॥ राष्ट्रयथा अस्या
 धात्रस्थः॥ यत्नवनकुल्युगमानुषानविहंथयन्ति॥ अमानुषानविहंथयन्ति
 ॥ यज्ञानविहंथयन्ति॥ नागानविहंथयन्ति॥ रुगानविहंथयन्ति॥ त्राकसानविहंथय
 ॥ यज्ञानविहंथयन्ति॥ युगानविहंथयन्ति॥ यिगानविहंथयन्ति॥ कृष्णानविहंथय
 ॥ यज्ञानविहंथयन्ति॥ अयस्यानानविहंथयन्ति॥ सङ्गुहानविहंथय

यन्नि॥सर्षपदानविहथयन्नि॥कृत्ययासानविहथयन्नि॥मृगासानविहथयन्नि॥
॥मयादानविह०यन्नि॥त्रुधिरानविहथयन्नि॥मांसादानविहथयन्नि॥
यूर्यादानविहथयन्नि॥उल्लदानविहथयन्नि॥उरुसिगादानविहथयन्नि॥
यन्नि॥गन्धादानविह०यन्नि॥ध्यादानविहथयन्नि॥दीपादानविहथयन्नि॥
यन्नि॥यूषादानविहथयन्नि॥यूलादानविहथयन्नि॥शस्यादानविहथयन्नि॥

हथयन्त्रि॥ गण्डादात्रानविहथयन्त्रि॥ ७॥ जाहात्रानविहथयन्त्रि॥ सर्वजाकि
नानविहथयन्त्रि॥ ८॥ यानविहथयन्त्रि॥ ९॥ जागाहात्रानविहथयन्त्रि॥ १०॥ विवि
गाहात्रानविहथयन्त्रि॥ सर्वहात्रानविहथयन्त्रि॥ रावनाहात्रानविहथयन्त्रि
॥ ११॥ द्याहात्रानविहथयन्त्रि॥ गन्धाहात्रानविहथयन्त्रि॥ वसाहात्रानविहथयन्त्रि॥
१२॥ १३॥ १४॥ १५॥ १६॥ १७॥ १८॥ १९॥ २०॥ २१॥ २२॥ २३॥ २४॥ २५॥ २६॥ २७॥ २८॥ २९॥ ३०॥

७

३१॥ ३२॥ ३३॥ ३४॥ ३५॥ ३६॥ ३७॥ ३८॥ ३९॥ ४०॥ ४१॥ ४२॥ ४३॥ ४४॥ ४५॥ ४६॥ ४७॥ ४८॥ ४९॥ ५०॥
५१॥ ५२॥ ५३॥ ५४॥ ५५॥ ५६॥ ५७॥ ५८॥ ५९॥ ६०॥ ६१॥ ६२॥ ६३॥ ६४॥ ६५॥ ६६॥ ६७॥ ६८॥ ६९॥ ७०॥
७१॥ ७२॥ ७३॥ ७४॥ ७५॥ ७६॥ ७७॥ ७८॥ ७९॥ ८०॥ ८१॥ ८२॥ ८३॥ ८४॥ ८५॥ ८६॥ ८७॥ ८८॥ ८९॥ ९०॥
९१॥ ९२॥ ९३॥ ९४॥ ९५॥ ९६॥ ९७॥ ९८॥ ९९॥ १००॥

सं. नाम यद्दं दृष्ट्यादा ॥ यस्य व ० यं गुरुय न धात्र मिथीर्धम्यक लयुगस्य वा कुल
उद्दिगां वा ॥ उर्ध्वगगा गुरुगगा, रुरुगगा, पूरुगगा, धनि मागगा यर्थ वाक
विनि ना वा विना लिखि ना, च नू मादिना यत्र लयुग विरु प्रदा संयु कादि नात्र विष्य
निगस्यक लयुग वा, कुल उद्दि उर्ध्व दीर्घ नागम थदि ना यस्खाय, क्रमाय, सुवि काय,
आगसं ता नाय रुविष्य नि ॥ गस्य क लयुगस्य वा, कुल उद्दि उर्ध्व दीर्घ नागम थय

गस्य सुखाय, क्रमाय, सुवि काय, आगसं ता नाय रुविष्य नि ॥ यर्थ मां व सुधमा
सम धात्र ती क था ग न र्ग्या रुय सं म्य कं, वृद्धयः ॥ उर्ध्व ना नाय जां रु, वा न म रुः
त्या आ वरु य न ॥ उर्ध्व नाग वि च उर्ध्व नादि न स्य देव ना ल्म न म स्कात्रः पुन दि नः यी
नि सो मन स्य जा नाः स्वय मा न ल्य, धन क था न्य रुहि म्या न यिष्य नि ॥ यी त्या न था ग न
मा स न ॥ यी त्या वृद्ध पु रु य त्या ॥ यी त्या ध र्म पु रु य त्या ॥ यी त्या स द्य पु रु य त्या ॥ या त्या

नमः॥ ॐ क्लृप्तमयप्रियं नय ॥ ३ ॥ हिल्लु विद्या सर्ववृद्धा रुग्णवत्तः समाहाययनि
स्वाहा॥ नमस्तु याथा का नां सर्वगं त्रिभुवनं ॥ ४ ॥ नमस्तु याथा यनमः॥ यत्तु व
त्तु याथा यनमः॥ वत्तु काथा यनमः॥ वत्तु काथा यनमः॥ वत्तु काथा यनमः॥ वत्तु काथा यनमः॥
वत्तु काथा यनमः॥ वत्तु काथा यनमः॥ वत्तु काथा यनमः॥ वत्तु काथा यनमः॥ वत्तु काथा यनमः॥
वत्तु काथा यनमः॥ वत्तु काथा यनमः॥ वत्तु काथा यनमः॥ वत्तु काथा यनमः॥ वत्तु काथा यनमः॥
वत्तु काथा यनमः॥ वत्तु काथा यनमः॥ वत्तु काथा यनमः॥ वत्तु काथा यनमः॥ वत्तु काथा यनमः॥

ॐ वज्रय कुरु न २ ॐ वज्रय कुरु स्वाहा ॥ ॐ आह त्रिनेत्र
 हा व २ ॐ स्वाहा ॥ ॐ आः सिना गय १ ॐ स्वाहा ॥ ॐ मलिय ३ ॐ स्वाहा ॥ ॐ वज्र धर्मः
 ॐ स्वाहा ॥ ॐ सर्व विष्णु धर्म ना वज्र सिद्धि ॐ स्वाहा ॥ ॐ सर्व न था ग न रु न था गो
 ॐ स्वाहा ॥ ॐ श्री सर्व न था ग न रु वा ॐ स्वाहा ॥ ॐ यु २ म हा यु ३ नि स्म नि वि
 रु य धीः स्वाहा ॥ ॐ व ल व ल व ल स्वाहा ॥ ग य था ॥ ॐ श्री सो म्य त्र य स्वाहा ॥ ॐ श्री दि वा त्र

यसादा॥ॐ॥दिक्त्रयसादा॥ॐ॥सुत्रयसादा॥ॐ॥ज्ञानत्रयसादा॥ॐ॥सुख
मगिसादा॥ॐ॥यसायात्रमिगायसादा॥ॐ॥वज्रसत्त्वहृदयसादा॥ॐ॥रुड
सादा॥ॐ॥सुखसादा॥ॐ॥रुडमगिसादा॥ॐ॥सुखमगिसादा॥ॐ॥सुसुग
सादा॥ॐ॥मैलमगलमगिसादा॥ॐ॥आलयसादा॥ॐ॥लेखसादा॥ॐ॥
सा॥ॐ॥श्रवयलेसादा॥ॐ॥उद्यानिसादा॥ॐ॥यीउरुदनि

१०

सा॥ॐ॥सखवगिसादा॥ॐ॥सखवगिसादा॥ॐ॥धवगिसादा॥ॐ॥धान्यवगि
सादा॥ॐ॥गीमगिसादा॥ॐ॥यलमगिसादा॥ॐ॥अमलसादा॥ॐ॥विमलसादा
॥ॐ॥त्रुमसादा॥ॐ॥निर्मलसादा॥ॐ॥मलनामगिसादा॥ॐ॥सुत्रयमलसादा॥
॥ॐ॥अननससादा॥ॐ॥विननससादा॥ॐ॥धिमननसादा॥ॐ॥विश्वकगिसादा
॥ॐ॥छदसादा॥ॐ॥विश्वत्रयसादा॥ॐ॥असाद्यार्कःसादा॥ॐ॥आकर्षलि
शील

स्वादा॥ॐ श्री आ वगनि स्वादा॥ॐ श्री यु वगनि स्वादा॥ॐ श्री त्रि त्रिम स्वादा॥ॐ श्री नू नूम स्वा
दा॥ॐ श्री धू धूम स्वादा॥ॐ श्री धि धिम स्वादा॥ॐ श्री गन गन स्वादा॥ॐ श्री ख खम स्वादा॥ॐ श्री ख
खम स्वादा॥ॐ श्री नग गन स्वादा॥ॐ श्री ना नय नु मा रु ग व मि धी व स थ रा ना म ध नी दा ११
न य न अ सा ग न नु स स र्च स लाना थ॥ॐ श्री रु ग व मि ॥ॐ ना न नु र्क नै नु न स्वादा॥ॐ श्री
न नै व स थ रा ना म ध न लि म म हान का व ल गु फि क नि स्वादा॥ॐ श्री व र्ज र स्वा

दा॥ॐ श्री व र्ज य म स्वादा॥ॐ श्री मा दा व र्ज य म स्वादा॥ॐ श्री आ व र्क नि स्वादा॥ॐ श्री यु व र्क
स्वादा॥ॐ ट क र स्वादा॥ॐ श्री ० क र स्वादा॥ॐ श्री ठ क र स्वादा॥ॐ श्री उ क र स्वादा॥
ॐ श्री उ क र स्वादा॥ॐ श्री रु क र स्वादा॥ॐ श्री व र्क लि स्वादा॥ॐ श्री यु व र्क लि स्वादा॥ॐ श्री
नि स्वाद नि स्वादा॥ॐ श्री व र्ज ध न सा ग ल नि धा य न थ ग ग स थ म नू स्म न र स्वादा॥
ॐ श्री स र्च न थ ग ग स थ म नू स्म न र स्वादा॥ॐ श्री स र्च व र्क स थ म नू स्म न र स्वादा॥ॐ श्री ध

ममस्य मनस्मन् ३ स्था दा ॥ ॐ श्री संघस्य मनस्मन् ३ स्था दा ॥ ॐ नट २ ममस्य त्रिवारस्य
सर्वस्य त्वानाश्रय २ र ग व गि व स्र धा ना अस्मिन् गृहकायका दाना ना दा रु नि धन धा
न्य सर्वोपकन ॥ निरुगन रत्न मि स्था दा ॥ ॐ श्री यत्रियूत्रय स्था दा ॥ ॐ श्री मनी लम गि स्था दा ॥ १२
ॐ श्री समंगत्रे म गि स्था दा ॥ ॐ श्री रुद्र म गि स्था दा ॥ ॐ श्री सुर उ म गि स्था दा ॥ ॐ श्री गु र्धि
वन उ म गि म दा ग जा श्री स्था दा ॥ ॐ श्री म दा सा न म गि स्था दा ॥ ॐ श्री म हा यो र म गि स्था

दा ॥ ॐ श्री म र्ध जन व गं क गि स्था दा ॥ ॐ श्री म र्ध इ स्था नि कं ग गि स्था दा ॥ ॐ श्री म र्ध ठा गु वि
ना म नि हं रु स्था दा ॥ ॐ श्री आ ग अ ग रु समय मनस्मन् स्था दा ॥ ॐ श्री आव न द म नू स्म
न स्था दा ॥ ॐ श्री आ ध न म नू स्म न स्था दा ॥ ॐ श्री ध गि म नू स्म न स्था दा ॥ ॐ श्री ज य म नू
स्म न स्था दा ॥ ॐ श्री वि ज य म नू स्म न स्था दा ॥ ॐ श्री म र्ध स त्व म नू स्म न स्था दा ॥ ॐ श्री व स्र
धा न स्था दा ॥ ॐ श्री व स्र स्था दा ॥ ॐ श्री व स्र व स्र धा न स्था दा ॥ ॐ श्री व स्र धे स्था दा ॥ ॐ श्री व स्र

अत्रिस्तदा॥ उं धी वसुमनि यि यस्तदा॥ उं धी वसु धा त्रि लि ये स्तादा॥ उं धी म दाल
स्त्रीरुगलनिवासिनी ये स्तादा॥ उं धी वसु धे उं धि य धी क त्रि धन क त्रि धा न्य क त्र उं स्ता
दा॥ उं धी वसु धा त्र धी स्तादा॥ उं धी वसु धा त्र ध त्रि धा त्र लि स्तादा॥ उं धी समय सोम्य
समय क त्रि म दाल समय स्तादा॥ उं धी धन धा न्य क त्रि समय स्तादा॥ उं धी वसु धा त्र न
हं हि र्गवति समय मनस्म त्र सिद्धि कृ त्र म स्तादा॥ उं धी वसु धा त्र धा त्र ल्य व त्र दा

13

अर्धधन धा न्य सर्व त्र ल व स्ता ल का त्रा सर्व धी का दि रिः सर्व य क लेः समृद्धि म द
सर्व स स्ता ना अ द दि म भा मि यु दि र भं सिद्धि य द दा य य स्तादा॥ उं धी धन धा न्य
य दि म द सर्व त्र ला व स्ता लं का त्राः सर्व य क त्र म नि धी म द न न्य धी व स धा त्र ली
पु त्री द या ये स्तादा॥ उं आः स्तादा॥ स्तः स्तादा॥ कीः स्तादा॥ स्ताः स्तादा॥ दाः स्तादा
॥ उं या न या ण व ह द्ना ग म मि नि अ नू र य त्रा नां ड वा मू र्णा दि नि॥ उं य त्रा ना च उं

[illegible]

॥ मन्त्राय च ॥ अथ कर्मसिद्धि हस्त नमः ॥ गायः सिद्धि नाम्ने लुपमनीह ॥ गयथ ॥
॥ स्वटश्चिदिश्चदश्चमृत्श्चगर्भश्चिदिददायय स्वाहा ॥ उल्लिख्यदिनश्चसर्वश्च
॥ स्वाहा ॥ वक्राललक्षय स्वाहा ॥ अन्नयाय स्वाहा ॥ ईवसूधे स्वाहा ॥ ईवसूधधियगय स्वा
हा ॥ ईवसूवा स्वाहा ॥ ई लोः स्वाहा ॥ ई सुत्रय स्वाहा ॥ ई ०० डाय स्वाहा ॥ ई याचिकयः स्वा
हा ॥ ई यमाय स्वाहा ॥ ई वनूय स्वाहा ॥ ई वगुवलय स्वाहा ॥ ई दिगिलाकया लाय स्वाहा ॥

ॐ यदिमि लोकया लाय स्वाहा ॥ ॐ दिसि विदिसि लोकया लाय स्वाहा ॥ ॐ सर्वलोक
या लाय स्वाहा ॥ ॐ सर्वधनधान्यसर्वरु निधानानि मान्दहि ददाय स्वाहा ॥ ॐ सर्वना
मय नमः स्वाहा ॥ ॐ सर्वयकाय नमः स्वाहा ॥ ॐ सर्वग्रहाय नमः स्वाहा ॥ ॐ सर्वनाम
विदय नमः स्वाहा ॥ ॐ सर्वरुगाधियगय नमः स्वाहा ॥ ॐ सर्वथगाधियगय नमः स्वा
ॐ सर्वयिसासाधियगय नमः स्वाहा ॥ ॐ सर्वयवनाय नमः स्वाहा ॥ ॐ सर्वमत्रगाय

७८

नमः स्वाहा ॥ ॐ सर्वमात्रगाय नमः स्वाहा ॥ ॐ सर्वमहामात्रगाय नमः स्वाहा ॥ ॐ
सर्वजाकिनीय नमः स्वाहा ॥ ॐ सर्वमहाकाय नमः स्वाहा ॥ ॐ सर्वमागत्रिस्थानम
ः स्वाहा ॥ ॐ सर्वरुंगमत्रीस्थानमः स्वाहा ॥ ॐ सर्वरुगिनीस्थानमः स्वाहा ॥ ॐ सर्वयिग
विनिस्थानमः स्वाहा ॥ ॐ सर्वयकलीस्थानमः स्वाहा ॥ ॐ सर्वदवगीस्थानमः स्वाहा
॥ ॐ सर्वयार्मसर्वसलनाकसर्वधनधान्यसर्वरु निधानानि मान्दहि ददाय

स्वाहा॥ॐ जम्बू लज्जल लायमर्द्धदद्यानिदहि मा न्यदाय य स्वाहा॥ॐ आर्यावलाकिन
धराय हं स्वाहा॥ॐ मलियम हं स्वाहा॥ॐ वज्रया लमर्द्धवज्रधराय हं स्वाहा॥ॐ जम्बू
लज्जल लाय उवः स्वाहा॥ॐ मानिरुद्राय स्वाहा॥ॐ यक्षरुद्राय स्वाहा॥ॐ वेङ्गव
नाय स्वाहा॥ॐ धनदाय स्वाहा॥ॐ महाधनदाय स्वाहा॥ॐ नन्दो देवो नमः स्वा
हा॥ॐ सुनन्दो देवो नमः स्वाहा॥ॐ रुद्रो देवो नमः स्वाहा॥ॐ सरुद्रो देवो नमः स्वाह
वि

विविक्तुलिनमः स्वाहा॥ॐ कलिमालिने नमः स्वाहा॥ॐ श्रीजम्बूलजल लाय
स्वाहा॥ॐ नमः श्री आर्यजम्बूलजल लाय स्वाहा॥ॐ श्रीमर्द्धजम्बूलजल लाय हं स्वा
हा॥ॐ जम्बूलजल लाय स्वाहा॥ॐ हंः संखया लनाग राजाय स्वाहा॥ॐ श्रीवसुधा
नमः स्वाहा॥ॐ श्रीवसुधनमः स्वाहा॥ॐ श्रीहं स्वाहा॥ॐ श्रीवसुधनमः श्रीमिथीकनिधनक
निधनकनिधो स्वाहा॥ॐ श्री ॐ लादेवो स्वाहा॥ॐ श्रीवलादेवो स्वाहा॥ॐ श्रीवसुधलादेवो

[illegible]

सुगुफादथे स्वाहा॥ उंभीमत्रस्यथे स्वाहा॥ उंभीचतुका नादथे स्वाहा॥ उंभीध
नदमहाधनं दो स्वाहा॥ उंभीयममहायमका स्वाहा॥ उंभीचिविकुलिकलिमालि
नो स्वाहा॥ उंभीयूर्ध्वस्यूर्ध्व स्वाहा॥ उंभीमहात्रयनिधानयामका स्वाहा॥ उं स्वाहा॥
उंजं स्वाहा॥ उंरुः स्वाहा॥ उंजः स्वाहा॥ उंलः स्वाहा॥ उंअः स्वाहा॥ उंयः स्वाहा॥ उं स्वा
स्वा स्वाहा॥ उंदा स्वाहा॥ उंवजसमाजः जहंवदा उं हंभी स्वाहा॥ उंभी स्वाहा॥ उं श्री स्वाहा

[illegible]

मथामगनामसदा मांसम्यक्कवृद्धा नां युजां कृत्वा यद्मासा नावरुयन् ॥ गणः
 पुच्छं नयिदि वनियमनराणि नामस्यि लायूनः प्रत्युषसूगंधजलस्रानः ॥ चित्रमेलवम्
 प्रावगावक्राशात्रीरूत्वा शुक्रं स्नानयुगि मां यदं ॥ वायुसार्ययत्नन यदुत्रमु मथुलकृत्वा
 । सनिदातां च नदीमवस्ति न्नसारुयन् ॥ त्रिलि वालि ॥ गनी गृह्य यनं गस्या दानयनं महा
 यत्रुषमारुया तं सुधा त्रया गृहं यत्रियुत्रयनि ॥ सर्वधनधान्यदित्रत्यसुवर्गः ॥ सर्वयक

[illegible]

कविः कथादत्तः दानयनिदिनसखासयः श्रद्धयायत्रमश्रद्धयासनिदाना
मिमांसात्रलीमकमहात्रागसप्रादात्रागाहिवायत्रनालयसविद्धिन्नमावलुयन्
॥ आचार्यसूत्रेव नियमवत्तागैस्त्रिंशत्कृत्वा दिवसस्य गिरिस्तुला ॥ सर्ववत्पयपदात्रः
युज्यते नानागैर्वदानयनित्रयि नियमनसर्वमायसगुणा ० कालत्रयथागकस
वर्षादिदानंदद्यान् ॥ गगनः पठितसिद्धात्तयनि ॥ गगनाज्जगत्तया श्रद्धयर्गवसूक्ष्म

नायामदायूत्रस्य माणयावसूधा नादानयनं गुरुयन्त्रियत्रयनि ॥ सर्वधनधन्यादित्रय
 सर्वधः सर्वयिकत्रलेष्वसर्वयिदुवानाभयनि ॥ न नदिले गुरुयनं सुमीवसूधा नाध
 नमी ॥ धनत्रयवाययदं गयगादययय वायूदियत्रयन्ययिस्तत्रा संयुका भया ॥ गुरु २१
 रुवि स्थिति ॥ दीर्घनागमर्थयदि नायसूखाय हा भय यागसूखा भय क्रमायसूखिका
 नमः साधु रोग वा निनि ॥ पुनिष्ठु रोग वगः सूचं डाना मगुरुयनि रोगवनी

देनाम्यसूधा तली शुक्ला ह सुशुद्ध उदगु आरु मना ध्यमूदि गयी नि हो मनः
 स्याज्जागोरुगवगम्यत्रा यानियत्यरुगं कनयूटी रोगवन्ममगदधो रगा ॥ उरुदीगाम
 रोगवन्नियवसूधा तामेनौ मधनली युद्धी रुगा धात्रिगा वायिगा यय वाया अनु
 मादिगामनसास्यत्रियिनि गायत्रय म्यवित्रा ०० दानी मरुं संयुका भयिष्ठा मी
 नि ॥ अथ गुरुलमा गुरु सूचं ड गुरुयनिः यत्रिय रू काय का हा गौ गत्रा श्रु ॥

अथ खलु सूच्यो नाम गृह्यगिरुगवन्मनकः शमसहस्रं युदक्रिणी रुखरः
 गवगयादो मित्रसारिवन्यरुगवन्मनः यननवलाहं रुगवगानि कान स्वगृह
 युकात् ॥ युक्रम्यचम गृह्यगिरुगवन्मनः यननवलाहं रुगवगानि कान स्वगृह
 यननवलाहं रुगवगानि कान स्वगृह युकात् ॥ युक्रम्यचम गृह्यगिरुगवन्मनः यननवलाहं रुगवगानि कान स्वगृह
 यननवलाहं रुगवगानि कान स्वगृह युकात् ॥ युक्रम्यचम गृह्यगिरुगवन्मनः यननवलाहं रुगवगानि कान स्वगृह

२२

नात्रथः ॥ युविद्यन्मानकः शलमलमृद्विगृह्यदयावृद्धरुगवगिवसः
 नात्रथः ॥ युविद्यन्मानकः शलमलमृद्विगृह्यदयावृद्धरुगवगिवसः
 नात्रथः ॥ युविद्यन्मानकः शलमलमृद्विगृह्यदयावृद्धरुगवगिवसः
 नात्रथः ॥ युविद्यन्मानकः शलमलमृद्विगृह्यदयावृद्धरुगवगिवसः

गिरुयथनकोऽमदीमदानगर्या॥यनसूचनुविश्वभनगत्वाञ्जुत्याभनननायसं
 कानउयसम्याखनत्रयविस्थादाकीन॥यनियुक्तुंसर्वधर्मेनधन्यसमृद्धतत्तसमृद्ध
 मदाकागकोहाभनरातिवयनियुक्तुनिदृष्टानिदृष्टुदुष्टउदगुआरुमनाःप्रम
 दिगःयीगिसोमनस्यजाग॥यनरुगवाहमीयसंकुनउयसंकुम्यायुषानानन्धावि
 यीगिसोमनस्यजागीरुगवगःयादोमित्रसाहिवन्यरुगवन्मगववायन्॥को

३३

३३:कःपुखयानसूचलोनामगदयगिर्महाधनामादात्रीममदाका
 हागात्रधनधन्यादिनत्यसुवर्द्धनत्तसमृद्धोजागः॥ ॥रुगवानाह॥आर्द्धभा
 नदसूचलो गदयगियत्रमधाद्यःकल्याणशुधाधत्रिगात्रनयं वसुधात्रा नामधा
 त्रतीयवर्द्धिगाउद्गदीगाधत्रिगावाचिगाययवाका,अनुमादिनायत्रयम्वि
 रुत्रसम्युकासयनेरुविष्यनि॥यद्वद्गनदिगायवद्गनसूखाया॥लोका नू

कस्यायमदुर्गाजनकायस्याथयदिगायसुखाय देवानाश्चमूर्त्त्यानां च ॥ यस्यागदय
नानलन्दयन्ध्रानीहसुगगायसु कगगा रुविष्यति ॥ हृदयगगाध्रिना ध्रिना
वाचिना शुनिमागुगगा गृहमागुगगा यसु कगगायुजिगाचरुविष्यति ॥ नस्य इति २५
कुरुयनरुविष्यति ॥ कः मनविरुवं संवदन् न स्य वदु जनदिगाय ॥ वदु जनसुखाय
कस्यायमदुर्गाजनकायस्याथयदिगाय ॥ सुखाय देवानाश्चमूर्त्त्यानां च ॥

अथमन्त्रसमन्वयः ॥ अमिसद्वर्कसमात्रकसुवक्रकायांसदवासुत्रमान
याया ॥ ॐ मारुतवमिमन्थाकत्रिष्यति ॥ अग्निकमिष्यति वा लगुह्यमं विद्यन ॥ न
कस्यदुर्गा ॥ अरुष्टीयानियदुर्गान्यानन्दवसु धात्रानामध्रिनीमलुयदानिचगा
निलङ्गीकृत्यकुशलमूलानां शुनियथमागमिष्यति ॥ कः युनवादाययसु कग
गानिहृदयगगानि ॥ ध्रिचिष्यति ॥ वाचयिष्यति ॥ गत्कस्यदुर्गा ॥ सद्यगधगगाना

मसंदेवकंसमोत्रकंसवेक्रकंसममनवाक्रकंसकायांसदवोसूत्रमीगदाकसर्वमं
धमनत्रियंराविगाधमनी॥अधिष्ठिताधमिगासमदयामुद्रिता।यकाभिगा
अनुमादिगायराविगायसमासवर्णिगाविदगाउलीनिकुगाआराविगाआ २५
रगागादत्रिडानांसखानांनानासर्ववाधियत्रियीठिगानांसर्वइहसत्वरुथाय
अथयदिगायसुखायसमागयत्रिरुग्मयशनि॥आनंदआह॥उरुदी

मरुगवत्रियवसुधमनामधमनीधमिगावाविगाययवाप्रा॥अनुमादि
गामनसामयत्रियिनिगाव॥साधुमरुगवत्रिनि॥॥अथखलायव्यानानदी
यासनादेकांसमरुगासंगंकुलादकिराजानुमलुलंयथियासुमिछाययन
मनैनाऊलियुलाम्यकनकरयूठारुलाएगवेकंसुखमवलाकनदिदानी
गयां॥००मांमथआरावग॥अचिकयडयसमद्वयाःसदा॥अनकरत

का कर्ना॥ आयुर्भुज्जुमिं गुरुमंथु संनमास्तु नदी वसुधावती सदा॥ अवि
रुगवान्बुद्धावद्धधर्ममायचिन्तय॥ अचिन्तयारिषसमन्ना वियाकम्भ
यचिन्तयाभस्तु जानयसर्वरुधर्मराजयनयत्रायात्रममिदलंयाकबुद्ध
तोत्रंनमास्तु॥ अथखलायस्मानानन्द० मं० धर्मययायंरुगवनाश्चिकाग॥
काठसुतुहाउदगुआरुमनाःयुमदिगः॥ युगिसोमनस्यजानारुगवन्कमे

२५